मधुबन ओम् शान्ति अंक 292 नवम्बर 2016

पत्र-पुष्प

ज्योति बिन्दु स्वरूप

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(09-10-16)

सर्व की ज्योति जगाने वाले परमज्योत परमप्यारे दीपराज शिवबाबा के अति प्रिय, बापदादा के नयनों के नूर निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश में जग को रोशन करने वाले सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ नवरात्रि, विजयदशमी तथा दीपावली आदि विभिन्न यादगार त्योहारों की ढेर सारी शुभ कामनाओं के साथ सबको बहुत-बहुत मुबारक हो, मुबारक हो।

देखो, ड्रामा में कैसे-कैसे सुन्दर संगम के यादगार उत्सव सभी खूब उमंग-उत्साह से मनाते, खुशियों में डांस करते हैं। बापदादा तो हम बच्चों को सदा उत्साह में रहने और सबका उत्साह बढ़ाने की प्रेरणायें देते हैं। कितना मीठा प्यारा बाबा हम बच्चों को कितनी मीठी-मीठी रमणीक बातें सुनाकर अपने समान उड़ता पंछी बना रहा है। बाबा कहते बच्चे, अब किसी भी डाली को पकड़कर नहीं बैठना। देह, देह के सम्बन्ध, संस्कार स्वभाव, व्यक्ति या वस्तु में लगाव झुकाव, प्रभाव की डाली को छोड़ बापदादा की अंगुली पर, कंधे पर नाचने वाले पंछी बनो। तो बोलो, हमारे सभी स्नेही भाई बहिनें समय प्रमाण सभी ऐसे उड़ता पंछी हो ना!

अब हम सभी ब्राह्मणों का संगठित योगबल और पवित्रता का बल ही जयजयकार के नारे बुलन्द करेगा। मैं तो समझती हूँ कि पाँचों विकारों को जीतने वाले आप हरेक मिसाल हो, ऐसे कई परिवार हैं जो पता भी नहीं चलता है कि इनका कोई लौकिक सम्बन्ध है, सभी न्यारे प्यारे बन अपना अच्छे से अच्छा पार्ट बजा रहे हैं। मुझे बड़ी खुशी है कि बाबा के बच्चे अपने आपको इतना लायक बना रहे हैं। कईयों का पुरुषार्थ इतना अच्छा है जो उन्हें देख सबमें उमंग आ जाता है। अभी तो समय निकाल विशेष ऐसी गुप्त प्रैक्टिस करनी है जैसे हम डबल लाइट हैं और बाबा की माइट खींच रहे हैं। लाइट रहने से माइट आपेही आती है और माइट लाइट बना देती है। तो ऐसा लाइट माइट सम्पन्न रहना भी भाग्य है। अब भारी होने की कोई जरूरत नहीं है, कोई भी बात सोचने की जरूरत नहीं है। राइट क्या है, रॉंग क्या है, उसको समझने की अच्छी बुद्धि बाबा ने दी है। हर आत्मा का पार्ट अच्छा है, सब एक जैसे नहीं होते पर हमारी नज़रों में सब अच्छे हैं। सच्चाई है तो खुशी में नाचते हैं इसलिए कहते सच तो बिठो नच। सच्ची दिल से साहेब को राज़ी कर सकते हैं। इज़ी राजयोग है। कहते हैं कर्म बड़े बलवान हैं परन्तु परमात्मा सर्व शक्तिवान मेरा साथी है। तो कर्म ऐसे करो जो कराने वाला भी खुश, राज़ी हो जाये। जो दिल के सच्चे हैं, दिमाग में कोई टेन्शन नहीं है, अटेन्शन में रहते हैं, वह भाग्यशाली हैं। खुशी जैसी खुराक नहीं, चिंता जैसा मर्ज नहीं। तो चिंता कभी नहीं करनी है क्योंकि अभी जो समय है वह अच्छे कर्म करने का है। इसमें मूँझने वा कुछ पूछने की आदत न हो, नहीं तो बिचारे हो जायेंगे। तन को भले कोई बीमारी होती है, पर मन अच्छा है तो तन भी ठीक हो जाता है। इसमें सहनशक्ति, समाने की शक्ति, समेटने की शक्ति यह तीन शक्तियाँ बहुत अच्छा काम करती हैं। अब कोई बात के विस्तार में नहीं जाना है, सार है - मैं कौन, मेरा कौन... उसी नशे में रहना है। दिल खुश है, दिमाग ठण्डा है, स्वभाव सरल है। ऐसी सबकी जीवन यात्रा सफल हो, ध्यान रहे जो कर्म मैं करूंगी मुझे देख और करेंगे, इसलिए ऐसा कोई कर्म न हो जो मेरे ऊपर बोझ चढ़ जाए। तो बड़ा सम्भालना होता है। लाइट रहना है, एवरीथिंग राइट करना है। बोलो, ऐसा अटेन्शन है ना। बाकी अभी तो बापदादा की सीजन के दिन समीप आ रहे हैं। आप सब मधुबन में आते रिफ्रेश होते रहेंगे।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"अब बेहद की वैराग्य वृत्ति इमर्ज करो"

1) समय प्रमाण अभी चारों ओर वैराग्य वृत्ति की आवश्यकता है। वैराग्य वृत्ति सिर्फ खाने पीने पहनने की नहीं, साधनों की नहीं लेकिन टोटल मानसिक वृत्ति, दृष्टि और कृति में बेहद की वैराग्य वृत्ति चाहिए जिससे देहभान से उपराम रहने की लहर फैले। तो देह की बातों से, देह की भावना और भाव से वैराग्य वृत्ति इमर्ज करो तब श्रेष्ठ उन्नति होगी और प्रत्यक्षता का आवाज फैलेगा।

2) बेहद का वैराग्य तब आयेगा जब अपने को बेहद की सेवा में बिजी रखेंगे। इसके लिए मास्टर ज्ञान सूर्य बन सकाश देने की सेवा करते रहो। यह सकाश देने की सेवा ही निरन्तर कर सकते हो, इसमें तबियत की बात, समय की बात नहीं है। तो दिन रात इस सेवा में लग जाओ। बेहद में जाने से हद की बातें आपेही छूट जायेंगी। बेहद की सकाश से परिवर्तन होना फास्ट सेवा का रिजल्ट है।

3) अभी समय प्रमाण सबको बेहद के वैराग्य वृत्ति में जाना ही होगा। लेकिन आपका शिक्षक समय नहीं बनें, उससे मार्क्स कम हो जायेंगी। कई कहते हैं – समय सब सिखा देगा, समय बदला देगा। समय के अनुसार तो सारे विश्व की आत्मायें बदलेंगी लेकिन आप समय का इन्तजार नहीं करो। समय को शिक्षक नहीं बनाओ।

4) ब्रह्मा बाप ने समय को शिक्षक नहीं बनाया, बेहद का वैराग्य आदि से अन्त तक रहा। तन-मन-धन किसी में जरा भी लगाव नहीं रहा। तन के लिए सदा यही बोल नेचुरल रहे कि यह बाबा का रथ है। तन से भी बेहद का वैराग्य रहा। मन तो मनमनाभव था ही। धन भी लगाया, लेकिन कभी यह संकल्प नहीं आया कि मेरा धन लग रहा है। कभी पर्सनल अपने प्रति एक रूपये की चीज़ भी यूज़ नहीं की। तो ऐसे फालो फादर करो।

5) जैसे ब्रह्मा बाप ने जब अपना सब विल किया फिर उसमें मेरापन नहीं रखा। समय, श्वांस भी अपने प्रति नहीं, उससे भी बेहद के वैरागी रहे। प्रकृति दासी होते हुए भी कोई एकस्ट्रा साधन यूज़ नहीं किया। सदा साधारण लाइफ में रहे। कोई स्पेशल चीज़ अपने कार्य में नहीं लगाई। सदा उपराम रहे। बेहद की वैराग्य वृत्ति प्रत्यक्ष जीवन में रही। तो फालो फादर करो।

6) साकार में सर्व प्राप्ति के साधन होते हुए, सर्व बच्चों की जिम्मेवारी होते हुए, सरकमस्टांश, समस्यायें आते हुए पास विद ऑनर का सर्टीफिकेट ले लिया। विशेष आधार बेहद की वैराग्य वृत्ति रही। अभी सोने की जंजीरों के महीन सूक्ष्म लगाव बहुत हैं, जो बेहद के वैरागी बनने नहीं देते हैं। कई समझते हैं - यह तो होता ही है, यह तो चलता ही है। कई मुक्त होना चाहते हैं लेकिन चाहना और करना - दोनों का बैलेन्स नहीं है। करना ही है - यह वैराग्य वृत्ति अभी इमर्ज करो।

7) समय की रफ्तार तेज है, पुरुषार्थ की रफ्तार कम है। मोटा-मोटा पुरुषार्थ तो है लेकिन सूक्ष्म लगाव में बंध जाते हैं, इसलिए उन्हें चेक करो और मुक्त हो जाओ। अगर किसी में सूक्ष्म लगाव भी होगा तो उड़ने नहीं देगा। इसलिए **अभी समय प्रमाण लगाव-मुक्त बेहद के वैरागी बनो।** मन से वैराग्य हो।

8) अब समय प्रमाण सम्पूर्णता के दर्पण में सूक्ष्म लगावों को चेक करो और सब किनारे छोड़ मुक्त हो जाओ। यह नहीं सोचो मेरे पीछे क्या होगा। जैसे ब्रह्मा बाप ने यह नहीं देखा कि मेरे पीछे क्या होगा? सब और ही अच्छा हो रहा है, अच्छा होना ही है। तो सेकण्ड में लगावमुक्त आत्मा उड़ गई। कोई लगाव ने खींचा नहीं। तो ऐसा ग्रुप बनाओ, जिसमें कोई लगाव न हो।

9) मेरी यह ड्युटी है, मेरे बिना यह कोई कर नहीं सकेगा – यह संकल्प नहीं आवे, इससे भी वैराग्य। वर्तमान वायुमण्डल के अनुसार मन में, दिल से अभी वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो।

10) बापदादा ने हर बच्चे को सब स्थूल साधन दिये हैं, जो बेहद के वैराग्य की वृत्ति में रहते हुए आवश्यक साधन चाहिए, वह सबके पास हैं। लेकिन बापदादा देखते हैं साधनों का प्रयोग करना या कराना ज्यादा है साधना कम है। साधनों के प्रयोग का अनुभव तो बहुत किया, अब साधना को बढ़ाओ तब बेहद की वैराग्य वृत्ति आयेगी।

11) विश्व में चारों ओर अभी इच्छायें बढ़ रही हैं, इच्छाओं के वश आत्मायें परेशान हैं इसलिए आप बच्चे अपने बेहद की वैराग्य वृत्ति द्वारा उन आत्माओं में भी वैराग्य वृत्ति फैलाओ। आपके वैराग्य वृत्ति के वायुमण्डल के बिना आत्मायें सुखी,

शान्त बन नहीं सकती, परेशानी से छूट नहीं सकती।

12) अब हर एक से अनुभव हो कि यह साधनों के वश नहीं, साधना में रहने वाले हैं। आवश्यक साधन यूज़ करो लेकिन जितना हो सकता है उतना दिल के वैराग्य वृत्ति से, साधनों के वशीभूत होकर नहीं। **अभी साधना का वायुमण्डल चारों ओर बनाओ।** समय प्रमाण अभी सच्ची तपस्या वा साधना है ही बेहद का वैराग्य।

13) अब बेहद के वैराग्य वृत्ति पर स्वयं से भी चर्चा करो और आपस में भी चर्चा करके प्रैक्टिकल में इस साधना के बीज को प्रत्यक्ष करो। वर्तमान समय के प्रमाण अभी अपनी सेवा वा सेवा-स्थानों की दिनचर्या बेहद के वैराग्य वृत्ति की बनाओ, उसमें आलस्य और अलबेलेपन को मिक्स नहीं करो।

14) जैसे ब्रह्मा बाप ने समय को शिक्षक नहीं बनाया, बेहद का वैराग्य आदि से अन्त तक रहा। एक ही लगन रही - सेवा, सेवा और सेवा..... और सभी बातों से उपराम रहे। तो आप बच्चे भी अभी समय प्रमाण बेहद की वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो तब सकाश देने की सेवा कर सकेंगे।

15) जैसे साकार में सर्व प्राप्ति के साधन होते हुए, सर्व बच्चों की जिम्मेवारी होते हुए, सरकमस्टांश, समस्यायें आते हुए बेहद की वैराग्य वृत्ति द्वारा पास विद ऑनर का सर्टीफिकेट ले लिया। ऐसे सूक्ष्म सोने की जंजीरों के जो लगाव हैं उनसे भी मुक्त बनो।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 24-4-13 *मधुबन*

“विदेशी भाई-बहनों के प्रश्न और दादी जानकी जी के उत्तर”

हर मिनट और हर सेकेण्ड, हर घड़ी फैमिली फीलिंग बहुत अच्छी हो। भले ज्ञान योग में मैं अकेली आत्मा हूँ परन्तु अकेली नहीं हूँ, बाबा के साथ हूँ। बाबा भी साथ तभी देता है जब मैं अकेली होती हूँ। बाबा बहुत होशियार है।

प्रश्नः- दादी, चारों सबजेक्ट में से आपका फेवरेट सबजेक्ट कौन-सा है?

उत्तरः- चारों ही।

प्रश्नः- दादी, आपकी खुद की विशेषता क्या है?

उत्तरः- जो बाबा ने दिया है वह सबको मिले।

प्रश्नः- दादी, आप बाबा को एक ऐसा कौन-सा टाइटल देंगे जिसमें बाबा की सब विशेषतायें आ जायें?

उत्तरः- जानी-जाननहार।

प्रश्नः- दादी, आपका फेवरेट गुण कौन-सा है?

उत्तरः- दे दान छूटे ग्रहण।

प्रश्नः- दादी, ब्रह्माबाबा कहने से कौन-सा शब्द आपके मन में आता है?

उत्तरः- मेरा बाबा।

प्रश्नः- दादी, लण्डन की विशेषता क्या है?

उत्तरः- कॉपी करने की।

प्रश्नः- दादी, सारे विश्व में सबसे बड़ी माया क्या है?

उत्तरः- चलायमान होना।

प्रश्नः- दादी, ड्रामा के अन्दर आपको कोई सीन करने के लिए कहा जाये तो आप कौन-सी सीन करना पंसद करेंगी?

उत्तरः- जहाँ देखेंगी कोई विघ्न है सूक्ष्म पॉवरफुल मन्सा संकल्प से चेंज करने का। पॉजिटिव में पॉवर है निगेटिव को खत्म करने की।

प्रश्नः- किस साल में विनाश होगा?

उत्तरः- यह बाबा बताता नहीं है पर तुम तैयार रहो, विनाश कभी भी हो सकता है।

प्रश्नः- हम यूथ आप जैसी 14 वर्ष तपस्या कर सकते हैं?

उत्तरः- क्यों नहीं, एक बाबा दूसरा न कोई, यह पाठ पक्का कर लो। अशरीरी भव का अनुभव ऐसे हो जो कन्टिनीव फोर्स वाला पुरुषार्थ चलता रहे। पुरुषार्थ में आलस्य-अलबेलापन न रहे। दृष्टि-वृत्ति की एक्टीविटी को एक्यूरेट करना माना पक्का बन जाना - यही तो भट्ठी करना है। जैसे भट्ठी में वो इटें पक्की हो जाती हैं तभी उसे दीवारों में यूज़ करते हैं। भट्ठी में कोई कच्ची ईट रह जाती है तो फेंक देते हैं। तो अभी ऐसी भट्ठी करो जो पक्के रहो, अभी तो ऐसी भट्ठी हर एक कर सकता है। कभी न कभी कोई ने ऐसा अच्छा पुरुषार्थ किया है जो फल-स्वरूप आज स्व सहित सर्व के काम में आ रहा है।

प्रश्न:- बाबा को आप बहुत अच्छी लगती हो, तो बाबा के साथ आपका अपना व्यक्तिगत सम्बन्ध है और उसमें आप बाबा के साथ कैसे मजे से बातचीत करती हो, तो हमें बहुत अच्छा लगता है, जब आप हमें ऐसा दृश्य दिखाते हो, अपना अनुभव शेयर करते हो, इससे आप हमें यह सिखाते हो कि हम बाबा को प्यार कैसे करें? तो अभी मैं यह जानना चाहती हूँ कि बाबा से आप अभी-अभी मतलब इन दिनों कैसी बातें कर रही हो? बाबा से किस तरह से चिटचैट करती रहती हो?

उत्तर:- जब कम्पैनियन दोनों मैच्युअर होते हैं ना, तो बात कम करते हैं पर दोनों के मंगल मिलन से हर एक को लाइट माइट का अनुभव होता है, तो यह एक शक्ति है आज्ञाकारी बनने की। जो बहुतकाल से आज्ञाकारी ओबिडियेंट हैं, वफादार हैं माना सिवाए बाबा के और कोई याद आता ही नहीं है। ईमानदारी यानि थोड़ा भी निष्फल नहीं हुए हैं। क्या करें... मजबूरी जब भी आती है माना बाबा से सम्बन्ध नहीं है। बाबा के हर बोल के लिए कदर है, उसी प्रमाण अपनी जीवन यात्रा सफल की है। तन-मन-धन मेरा नहीं है, थोड़ा भी जो मेरा कहाँ भी है, तो अन्दर वो खींचता है। सम्बन्ध में मेरापन है, तन में मेरापन है, कहीं पर भी मेरापन है तो उसको समर्पण कैसे कहेंगे? कुछ मेरा नहीं माना समर्पण। तो बाबा ऐसे बच्चे को छत्रछाया के नीचे ऐसे रखता है जैसे गोदी में लेके गले का हार बनाया, अभी सेवा में छत्रछाया है। कोई और संकल्प कुछ है ही नहीं।

प्रश्न:- आज की दुनिया में हम सब तो बाबा के बच्चे हैं, हम भाग्यशाली हैं जो बाबा का ज्ञान हमें मिला हुआ है कोई भी बातें सामने आती है तो, अगर बाबा की नॉलेज मुझे न मिली होती तो मेरा जीवन कैसा होता, मैं समझ नहीं सकता हूँ। कई बारी हमारे सामने ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं तो हमारे से कुछ हो जाता है फिर बाद में रियलाइजेशन होता है कि ऐसा करना चाहिए था, ऐसा करते तो अच्छा था, तो हमारे में ऐसी समझ कैसे आये जो हम समझ सकते हैं कि सही समय पर क्या सही करने का है?

उत्तर:- पुरुषार्थ ऐसा है, जो कोई संरकमस्टांश हैं तो कोई बात नहीं है, बाबा बैठा है, यह अन्दर में विश्वास हो, निश्चय रहे। सोचने से बात बड़ी हो जाती है। बाबा बैठा है... इसलिए चिंता करने की बात नहीं है। हमने 50 साल से सर्विस के अनुभव में देखा है, कई जगह पर अर्थक्वेक आया होगा, कोई आपदा आयी होगी, पर हमारे पास बाबा के बच्चे सेफ रहे हैं। कुछ भी हुआ है फिर भी कोई बच्चे को कुछ भी नहीं हुआ है क्योंकि ऐसों की सम्भाल करने के लिए बाबा कोई-न-कोई विधि अपनाता है और वो फिर सारी लाइफ काम आती है। यह बहुतकाल भगवान के साथ का अनुभव है इसलिए कभी भी कुछ भी होता है तो कभी यह नहीं कहो कि मैं क्या करूँ? बाबा को याद करते रहो तो कोई-न-कोई युक्ति वा समझ बाबा वक्त पर दे देता है। तो बाबा की याद में अच्छी तरह से लाइफ को सफल करो।

प्रश्न:- बाबा हमें बताते हैं कि हमें निश्चय होना चाहिए बाबा में, ड्रामा में और खुद में। अब हमारा ड्रामा में और बाबा में तो पूरा विश्वास है लेकिन खुद में थोड़ा कम है तो उस विश्वास को कैसे बढ़ायें? खास करके जब हमारे सामने इतनी सारी बातें आती हैं।

उत्तर:- विश्वास बढ़ता तभी है जो कोई भी बात के विस्तार में नहीं जाते हैं। क्या करूँ वा कैसे करूँ... सोचा ना तो बात के विस्तार में चले गये। ड्रामा अनुसार परीक्षा आयी है, बाबा बैठा है, वन्डरफुल है ठीक हो जाता है। फिर ऑटोमेटिक अच्छी बातें जो हैं वो हमारे से होंगी यह विश्वास है। बाबा ने कराया मैंने किया। मैं कैसे करूँ... माना बाबा में निश्चय नहीं है। ड्रामा की नॉलेज इतनी गहरी है, बाबा सारा दिन स्मृति दिलाता है, यह मेरा बच्चा कल्प पहले वाला है, मुझे तो यह नशा है। बाबा कहता है मेरा हो कल्प पहले वाला हो। बाबा ने कहा मेरा बच्चा, तो मुझे फीलिंग आयी। बाबा ने कहा स्वदर्शन चक्र फिराओ, स्वदर्शन चक्र नहीं फिराते हो तो अपने में विश्वास नहीं होता है। और मेरे को अपने में विश्वास है, ड्रामा की नॉलेज अच्छा चला रही है, बाबा मेरा बाप टीचर सतगुरू है। मेरा बाप धर्मराज भी है, यह याद रखने से मन-वाणी-कर्म पर अटेन्शन रहता है वह श्रेष्ठ है तो संकल्प, समय भी सफल। एक घड़ी भी निष्फल नहीं जायेगी।

प्रश्न:- कई यूथ चाहे योग में, चाहे कर्मणा वा दिनचर्या में जब डिसीप्लीन में नहीं चलते हैं तो लगता है कि वे अपने आपको ही धोखा दे रहे हैं, तो डिसीप्लीन के साथ हम कैसे फ्रैण्डशिप बनाये रखें या उसको अपना फ्रैण्ड कैसे बनायें?

उत्तर:- सबसे पहले तो डिसीप्लेन के महत्व को समझना है। जैसे क्लास में टाइम पर आना, अमृतवेला करना, शाम का योग करना कुछ भी हो। अलबेलाई, आलस्य और बहाना यह तीन बातें नहीं चाहिए। कोई भी कुछ भी बोले, बाप की पालना, पढ़ाई का कदर हो। जो बाबा से मिला है उसका कदर हो तो ऑटोमेटिक वो जो कदर है ना, वह हमको डिसीप्लेन पर चलाता है। थोड़ी भी अलबेलाई भूलें कराती है, कराची में

एक बारी मम्मा को एक मिनट लेट हुआ। बाबा क्लास में चला गया तो मम्मा वहीं सीढ़ियों पर बैठ गयी, तो हमने कहा कि मम्मा ऊपर क्लास में चलो ना, तो मम्मा ने कहा मैं लायक नहीं हूँ। बाबा क्लास में पहुंच गया है अभी मैं कैसे जाऊं। तो यह ऐसी डिसीप्लेन हो। डिसीप्लेन पर चलने में (आलस्य, अलबेलापन, बहाना) तीन बातें बड़ी धोखा देने वाली हैं। मैं कभी बहाना नहीं दे सकती हूँ, जो टाइम पर करने की वैल्यु है, पता है ना यानि इसमें भी मार्क्स मिलते हैं। तो कोई भी काम टाइम पर करें यह भी डिसीप्लेन है।

दूसरा क्लास

“निश्चयबुद्धि, सच्ची भावना और अटल विश्वास की लाइफ औरों को प्रेरणा देती है”

(दादी जानकी)

मुरली पूरी होते ही जो वरदान और स्लोगन होता है, वह बहुत काम का होता है। धारणा के लिए सार भी अच्छा होता है। तो बाबा हम बच्चों को रोज़ाना ताजा खाना खिलाता है। ऐसे नहीं जो कल खिलाया पेट भर गया इसलिए आज जरुरत नहीं है। इस शरीर को तो रोज़ाना ताजा भोजन चाहिए, रोज़ ताजा भोजन करेंगे तो फ्रेश रहेंगे। सरेण्डर मरे के बराबर हैं क्योंकि यह तन मन धन सम्बन्ध मेरा नहीं। तो हर एक अपने आपको चेक करे कि सम्बन्ध-सम्पर्क में आते भी यह ऐसे क्यों करता, क्या करता? क्वेश्चन तो नहीं! जिस घड़ी क्वेश्चन उठाया माना क्वश्चनों की क्यू लगेगी। कभी कोई कहेगा कोई क्वेश्चन नहीं है, मैं ठीक हूँ, दिल से कहेगा तो चेहरा बतायेगा परन्तु कोई क्यू लगायेगा। क्वेश्चन माना क्यू में खड़ा होना, आन्सर मिलेगा तो भी नहीं सुनेगा। सुने तो आगे बढ़े ना। पंख टूटे पड़े हैं, भले बाबा कहता है चलो उड़ जा रे पंछी... पर पंछी तभी उड़ेगा जब देश बेगाना है। मेरा नहीं है, पराया है। संगम का यह समय बताता है कि यह देश पुराना है, पराया है। बाप नया बनाने आता है। बाप कोई पुराने को रिपेयर करने नहीं आता है, नया बनाने आता है।

तो देश देखो, सम्बन्ध देखो, यह भी हमारा नहीं, यह भी हमारी नहीं, कुछ हमारा नहीं। नाम मात्र हम एक साथ बैठे हैं लेकिन अन्दर है, उमंग-उत्साह के पंख से बड़ा अच्छा लगता है। बाबा की दृष्टि से उस पार चले जाते हैं, तो बाबा कभी कहता है मेरे को याद करो, कभी कहता है मेरे घर को याद करो। बैठा यहाँ सामने है, पर जहाँ से जिस घर से आया हुआ हूँ, वो तेरा भी घर है। तो याद में हर एक का भिन्न-भिन्न प्रकार का अनुभव होगा। कभी अपने को आत्मा समझने से बाबा को याद करना सहज है। कभी आत्मा समझने में टाइम लगता है, पर बाबा की याद से आत्मा समझ जाते हैं। कभी यह बहुत अच्छा है, आत्मा हूँ... बाबा ने खैंच लिया, कभी बाबा की खैंच से ऑटोमेटिक आत्म-अभिमानी बन जाते हैं। मतलब हमको बाबा को याद करना है, कैसे भी करके, याद करना नहीं पर याद में रहना है। ऐसी याद में रहना है जिसमें आत्मा प्युअर बनती जाये, कोई घड़ी ऐसी नहीं जो याद करना पड़े।

बाबा की सब बातें अच्छी लगती हैं, पर कोई कोई बातें बहुत अच्छी लगती हैं। निश्चय बुद्धि से विजय हुई पड़ी है, यह अनुभव है। निश्चय बुद्धि से कभी क्वेश्चन नहीं उठने से जो भावना से हम कार्य करते हैं, वह सफल होता है। सच्ची भावना, अटल विश्वास की लाइफ औरों को प्रेरणा देने वाली होती है, इसमें कमाल है निश्चय की या भावना की या पहले से ही अन्दर से ड्रामा की नॉलेज में बहुत विश्वास है कि हुआ पड़ा है पर मुझे अभी करना है, तो अच्छा हो जाता है। ऐसे नहीं जो ड्रामा में होगा, यह भी नहीं कहो, बोलने की बड़ी शुद्ध भाषा हो, जो करनी कथनी एक हो। करनी एक कथनी दूसरी, यह जँचता नहीं है। पहले करना है, जो करता है उसको मुख से कहने की जरुरत नहीं है। करना है, समय ऐसा है, समय का बहुत कदर है, पढ़ाने वाला बाबा हमें पढ़ा रहा है, हम पढ़ रहे हैं। मुख्य बात है शिवबाबा प्रजापिता ब्रह्मा के तन में बैठके पढ़ाता है, शिवबाबा को यह नशा नहीं है, विश्व की बादशाही मुझे मिलने वाली है। वो देने वाला है, ब्रह्मा बाबा लेने वाला है।

सारे मनुष्य सृष्टि में कुदरत के नियम अनुसार मनुष्य आत्मा को बाबा देवता बनाता है। वहाँ कोई कमी नहीं होगी। हम यहाँ मेहनत करके देवता तो क्या फरिश्ता बन रहे हैं। धरती पर पाँव न हों, उड़ती कला हो इसलिए सब जहाँ तहाँ प्लेन में घूमते रहते हैं। पता ही नहीं चलता है, प्लेन में बैठे हैं

और प्लेन चल या उड़ रहा है, बहुत शान्त... तो प्रकृति भी दिखाती है, मैं कैसे समय पर साथ देती हूँ। हाँ, कायदा है सीट बेल्ट बांधने की। एक बारी स्पीड़ पकड़ ली तो बेफिक्र हो सो जाओ। फिर बताते हैं कितना टाइम लगेगा उतरने में, फिर भी अगर कोई कहे नहीं, यहीं कम्फरटेबल है, आराम से बैठे हैं, तो आराम से बैठ जायेंगे क्या? तो यहाँ कभी कभी कम्फरटेबल मिलता है, तो उस ज़ोन में रहने वाले नहीं बनो, यहाँ सब बहुत अच्छा है, इसलिए मैं यहीं रहूँगी, फाइनल कर दिया। लेकिन यह नहीं चलेगा, किसकी नेचर है, बिल्कुल तब तक नींद नहीं आयेगी। वास्तव में सच्चाई और प्रेम से कहीं कोई दिक्कत नहीं आती है। जो बाबा ने डिसीप्लेन बनाके दिया है उस पर एक्यूरेट रहें। मेरे को यह नहीं चलता है, मेरे को ऐसे करना है.. तो बाबा बंधायमान नहीं है उसको सम्भालने के लिए। जो बाबा ने डिसीप्लेन बनाके दिया है, वह अच्छे लगते हैं उसमें कम्फरटेबल हैं। नियम पर चलना बहुत सुखदाई है। नियम, मर्यादा, सभ्यता... बातचीत करने की सभ्यता ऐसी हो, मान मांगने से नहीं मिलता है, माननीय बनने से मान ऑटोमेटिक मिलता है।

बाबा चला रहा है पर जो बाबा की श्रीमत पर चले हैं, उसकी भी अन्दर प्यार भरी सकाश है। ताकि सबको पता चले हमारे फाउण्डेशन में स्थापना के कार्य में असली साथी कौन हैं? बाबा अकेला नहीं है, शिवबाबा बीजरूप है। ब्रह्माबाबा को बीजरूप नहीं कहेंगे।

सभी पूर्वजों का फोटो यहाँ इतना बड़ा अच्छा लगाओ जो सब देखें, उनके वायब्रेशन काम करें। जैसे दादी का, बाबा का, मम्मा का... पर बाबा मम्मा ने इन्हों को ऐसा कैसे बनाया? बाबा ने जो सेवा के बन्धन में बांधा है तो सूक्ष्म मन वाणी कर्म से स्नेह भरे वायब्रेशन से अच्छे अनुभव होते हैं। निश्चय की भी शक्ति है, गैरंटी है दुनिया में कुछ भी हो जायेगा हमको कुछ नहीं होगा। और कुछ कहने की बात ही नहीं है, विनाश कब होगा? यह पूछने की क्या बात है? तुम तैयार तो हो जाओ। विनाश के पहले नई दुनिया की स्थापना हो जाये, तुम्हारी फरिश्तों जैसी स्थिति बन जाये। बहुतकाल से निर्वैर, निर्भय स्थिति हो तो विनाश के समय मिरुआ मौत मलूकों के लिए शिकार... ऐसी स्थिति अभी-अभी बनानी है। विनाश के पहले हम तैयार बैठे हैं, ऐसे ऊपर रहते हैं ना, तो कोई भी बात हमारे तक पहुँचेगी नहीं। पाँच तत्वों की हम रक्षा कर रहे हैं, उसको सतोप्रधान बना रहे हैं, तो प्रकृति का कोई भी प्रकोप हमारे नज़दीक भी नहीं आयेगा। तो हमारे लिए सब अच्छा होगा। मेरी सरेण्डर लाइफ है, तो अशरीरी, देह यहाँ मैं वहाँ...। मैं आत्मा बाप के साथ घर में आयी है, ब्रह्मा मुख वंशावली हूँ, यह अभ्यास करो।

22-10-15

"दीपावली के निमित्त गुल्जार दादी जी प्रेरणायें"
दीपावली के पहले सच्चा-सच्चा दशहरा मनाओ, रावण को जलाओ

(गुल्जार दादी)

हेलो, सब मौज में दीपमाला मना रहे हो ना! दीप भी जगा रहे हैं और दीप जलाते हुए मौज भी मना रहे हैं। हरेक के दिल में यही आता है कि यह दीपक जगाना तो हमारी स्थूल यादगार है। हमारी तो आत्मा रूपी ज्योति बाबा ने जगा दी जो जगती ही रहती है। ऐसे दीपमाला में जो दीपक जगाते हैं वो जगता ही रहता है और जगा हुआ दीपक कितना अच्छा लगता है। बुझा हुआ दीपक तो बन्द वाला काला हो जाता है और जगे हुए दीपक को देखो तो कितनी रोशनी अच्छी लगती है। हमको हर बात में ज्ञान की ही बातें याद आती हैं। तो बाबा कहते हैं अभी आपका दीपक ज्ञान से जगा हुआ हो। बाबा ने अनेक दीपक जगाये हैं। तो अनेक दीपक जगने से दीवाली हो जाती है। एक दीपक जगे तो दीवाली नहीं कहा जाता, तो आप अनेक दीपकों में एक दीपक हैं। एक-एक दीपक अपनी रोशनी दे रहे हैं। कितनों को रोशनी दे रहे हैं? अनेकानेकों को। तो यह दीपक स्थूल मिसाल है, वो देख करके हमें भी याद आता है कि हमारा दीपक भी सदा जगता है? सदा रोशनी के साथ जो जगे हुए दीपक की झलक होती है, ऐसे मैं दीपक भी ऐसे ही जगता हुआ अपनी झलक दिखाने में तत्पर हूँ? क्योंकि आजकल

तो अन्धकार ही अन्धकार है, अन्धकार के बीच में मैं जगा हुआ दीपक हूँ, तो जगा हुआ दीपक अपनी रोशनी से और दीपकों को भी साथी बना रहा है। तो उसको जगे हुए दीपकों को देख करके कितनी खुशी होती है। बुझे हुए दीपकों को देखकर के खुशी नहीं होती है। उसको जगाने की कोशिश करते हैं और एक दीपक से दूसरे दीपक को जगाके रिमझिम लगा देते हैं, तो सभी देख करके, खुश होके कहते हैं वाह दीवाली वाह! वाह अन्धकार वाह नहीं करते हैं। लेकिन दीपावली या रोशनी देख करके गाते हैं वाह! तो अभी वाह वाह! कहने की सीजन है। कोई भी चाहे छोटा बच्चा है, चाहे बूढ़ा है, यह दीपक जरूर जगाते हैं। अगर दीवाली के दिन भी दीपक नहीं जगाया तो उसको भाग्य नहीं कहेंगे। लेकिन हम तो सभी भाग्यवान हैं इसलिए हम दीवाली मना रहे हैं। और जो दीवाली मनाते हैं तो आत्मा रूपी दीपकों को भी नोट करते हैं कि वो कितनी रोशनी दे रहे हैं और अमर हैं या बुझ जाते हैं! जितना घी डालेंगे उतना ही जगेगा ना। तो इतना घी है हमारे पास! अविनाशी ज्ञान का घी है तो हमारी ज्योति सदा जगती रहती है। जगा हुआ दीपक सबको प्यारा लगता है और कई काम भी करता है। बुझा हुआ दीपक एक तो देखने में भी अच्छा नहीं लगता और कोई काम भी नहीं होता। तो अगर दीपक जगता है तो देखने का काम भी होता और जगा हुआ चमकता है तो उसमें आकर्षण भी होती इसीलिए हमेशा अपने को जगा हुआ दीपक समझके अन्धकार को मिटाने वाले दीपक समझो और उससे लाभ उठाओ। तो आज दीपावली मना रहे हो ना! तो जैसे खुद जगा हुआ दीपक हो ऐसे दूसरों का भी दीपक जगा दो। अगर आस-पास वालों का भी दीपक बुझा हुआ होगा तो मजा नहीं आयेगा लेकिन चारों तरफ रोशनी करने से कितना अच्छा सारा मोहल्ला चमकने वाला हो जाता है। तो ऐसे हमें भी बाबा कहता है सदा अपना और अपने अड़ोस पड़ोस में सबका दीपक यानी आत्मा जो है वो जगी हुई चमकती हुई दिखाई दे। फिर दूसरा है मीठा मुख, तो कितनी मिठाई बनाते हैं। वैरायटी भी बनाते हैं। तो सभी अपना दीपक चेक करना और मुख के मीठे बोल की मिठाई जरूर खाना और खिलाना। सदा जागती ज्योत बन करके सबको रास्ता दिखाना तो सभी मंजिल पर पहुंच जायेंगे।

सभी ने आज के दिन की मुबारक भी बाबा को दी होगी कि बाबा हमारे अन्दर से सूक्ष्म में भी जो कमी कमजोरी रही हुई है वह आज हम आपको समर्पित कर पुराना चौपड़ा खलास करते हैं। तो जो भी है यहाँ वहाँ रहा हुआ वो आज के दिन जलाके यानी खत्म करके बाबा को अपना संकल्प दे दिया? बाबा हमने रावण माना जो भी विकार हैं उनको आपको दे दिया। अभी हम इन विकारों से मुक्त होके रहेंगे, चलेंगे, अगर कोई भी बात हुई तो आपको देकरके फिर रिफ्रेश होके चलेंगे। ठीक है ना। जैसे दशहरे के दिन रावण को जलाते हैं। आप सबने भी दीवाली के पहले दशहरा मनाया है ना। जो भी कुछ सूक्ष्म में भी रहा हुआ हो, संकल्प रूप में भी तो भी बाबा को दे दो। सम्पन्न तो बनेंगे ना और सम्पन्न रूप बाबा को कितना अच्छा लगता है। दशहरे के बाद फिर यह दीपावली आती है। तो बाबा को कहना कि बाबा हमने दशहरा सचमुच मना लिया है, मनायेंगे नहीं मनाया है, यही हम सबका प्रॉमिस है और यही खुशी मनाना है। जो भी कुछ सूक्ष्म में रहा हुआ है उसे आपको देकरके दशहरा मना लिया, जला ही दिया। बच्चा सम्पूर्ण बन जाये तो बाबा को कितना मजा आता है। तो सभी दीवाली मनाने के लिये तैयार हैं। ऐसे नहीं, होंगे लेकिन हैं और आपसे मिलेंगे तो कितनी खुशी की बात है। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"दादी जी का अनुभव"

आज अमृतवेले आंख खुलते ही एक आवाज सुनी जैसे कोई जोर-जोर से चिल्ला रहा है, पुकार रहा है, आवाज कर रहा है। इधर-उधर देखा कुछ नहीं नज़र आया, ऐसे भी लगा जैसे कोई मर गया हो, इतने में ही रिकार्ड बजा साढ़े तीन का, उठी। आकर बाबा के पास, बाबा की मीठी यादों में बैठी - ऐसी भासना आई बाबा बार-बार यह कह रहा है बच्ची अब बहुत जल्दी वो दिन आना है, जब तुम्हारे विजय के नगाड़े बजने हैं। दुनिया देखती ही रह जायेगी, तुम उड़के चले जायेंगे। तुम शक्तियों की सिद्धि कहो, सफलता कहो, विजय कहो, अब बहुत जोर से सारी दुनिया में यह आवाज उठनी है,

इसलिए सबको बोलो - कोई भी बीता हुआ कुछ भी न देखे, आगे-आगे बढ़ते जाओ, यह क्या होगा, कैसे होगा। यह न सोच सब आगे-आगे बढ़ते जाओ। ऐसे ही सुबह के टाईम कई बार बाबा कुछ प्रेरणा दे देता।

जैसे कल की मुरली थी तुम्हें सिद्धि स्वरूप बनना है, मैं बाबा से पूछती हूँ क्या सिद्धियों को सामने लाना है, क्या सिद्धियों को आह्वान करना है, या सिद्धि स्वरूप बनना है? या सिद्धि स्वरूप हैं? उसी घड़ी आता मैं ये सूक्ष्म संकल्प भी क्यों उठाऊं, मुझे सिद्धि स्वरूप बनना है। क्यों न समझूं मैं हूँ ही सिद्धि स्वरूप। न हूँ तो संकल्प उठाऊं। शक्य हो तो पुरुषार्थ करूँ। हमारे मस्तक पर लिखा है चमकती हुई मणियां हो, मणी का अर्थ ही है चमकना। कल्प पहले भी चमक वाली मणी थी, आज भी हूँ, हमें नशा रहता हम हैं ही बाबा की चमकती हुई मणियां, सिद्धि स्वरूप मणियां, हम कोई झूठे पत्थर नहीं हैं, हम तो सच्चे पन्ना और माणिक हैं, तब तो हमारे ऊपर पुखराज परी, नीलमपरी का गायन है। हर बात में मैं अपने को सफलतामूर्त, विजयी देखती हूँ, मैं कभी दिलशिकस्त नहीं होती।

अमृतवेले ऐसी मीठी-मीठी रुह-रिहान बाबा से चलती है। बाबा हम बच्चों को रोज़ हर तरह से पुश करता। सवेरे का टाइम है वरदान लेने का और शाम का टाइम है वरदान देने का। यह कैसे? सवेरे जब मैं बैठती तो जैसे ऊपर से फोकस की तरह सारे वरदान बाबा मुझे दे रहा है, ऐसे लगता जैसे किसी चीज़ पर सर्व प्रकार के लाइट के फोकस दिये जाते - वैसे सारे वरदानों का फोकस बाबा देता और मस्तक चमकता जाता - गोल्डन होता जाता। इन जटाओं पर जैसे स्नो फॉल की तरह लाइट का फॉल बह रहा है। ऐसे मैं स्वयं के साथ-साथ सबको देखती हूँ। सवेरे-सवेरे बुद्धि दिव्य रहती, देह-भान से परे बाबा में रहती, सतोप्रधान होती, उस टाइम बाबा से सहज ही बुद्धि जुटी होती, वह घड़ियां ऐसे अनुभव होती जैसे सारे दिन के लिए बाबा सब कुछ कर देता है, तब कहा अमृतवेला है वरदाता बाप से वरदान लेने का। कई बार बाबा गुह्य ज्ञान की लहरों में ले जाता, कई बार सर्विस की नई-नई प्रेरणायें देता, शक्तियां भरता फिर कहता बच्ची मैंने छत्र रख दिया - अब जाओ सारा दिन राजधारनी में सेवा करो, सिंहासन पर तो छत्रधारी ही बैठेंगे ना। कई बार सुबह सुस्ती होती, इधर सुस्ती आती उधर चुस्त करने बाबा उठा ले जाता, फिर कहता देखा उठी तो क्या पाया? बाबा कहता बच्ची सुस्त नहीं बनो, उठो तो छत्र रखूँ, अमृतवेले बाबा छत्रछाया का छत्र रख देता है। माया से विजय पाने के लिए बाबा छत्र पहना देता है, कोई भी दुश्मन नहीं आता। दूर से ही भाग जाता, इसलिए कहते हैं सवेरे-सवेरे बाबा की छत्रछाया के नीचे बैठो तो छाया में रहने से माया परे हो जायेगी।

मैं देखती हूँ अमृतवेले बाबा के सामने जैसे अनेक बच्चे बैठे हैं - बाबा सबके ऊपर हाथ फिराता जाता, यह कोई भक्ति नहीं, बाबा हम सबके ऊपर सिर से पांव तक हाथ घुमा देता कि बच्चे तुम सदा छाया में रहना, माया का तुम्हारे ऊपर कोई वार न हो। इसको कहते हैं कदम में पदम, बाबा अपनी लाइट माइट से माया की नज़र उतार देता है। हम बाबा के कितने लक्की, भाग्यशाली बच्चे हैं, बाबा हमें इतनी लाइट देता, शक्ति देता, सेफ्टी में रखता, इसको कहते हैं माया तुम्हारा बाल भी बांका नहीं कर सकती। ऐसा हम सभी के लिए देखती, सब आकारी रूप में फरिश्ते होते। सबको बाबा रुहानी दृष्टि देता फिर कहता जाओ सारा दिन कामकाज करो, मैं अपना साकारी रूप नहीं देखती। मैं बाबा की परीज़ादी हूँ, बाबा और बाबा के हम बच्चे चमकती हुई मणियां हैं। बस। यह सब सुनाने का सूक्ष्म भाव यह है कि आप सब भी अपने को बहुत-बहुत महान आत्मा समझो, यह अन्डरलाइन करो, हम कम नहीं, पता नहीं यह होशियार हैं, मैं ऐसी हूँ, यह ऐसी, मैं ऐसी, ऐसा कभी भी नहीं सोचो। छोटी भी सुभान अल्ला तो बड़ी भी। छोटी भी महान आत्मा तो बड़ी भी महान।

हम सबको निश्चय है हमें भगवान पढ़ाता है, हम ईश्वरीय परिवार के हैं, ब्रह्मा बाबा हमारी गुप्त माँ है, हम भगवान के प्यारे हैं, हम शेरणी शक्तियां हैं। हम सबका टाइटिल, निश्चय, सरनेम एक ही है, हम ब्राह्मण कुल भूषण हैं, इसलिए कभी भी अपने को नीचा नहीं समझो। नम्रता गुण हैं, नीच दासपना है। भावना महान रखो, चलन नम्रता की रखो।

शाम का टाइम है देने का, मैं समझती हूँ मैं योग में नहीं बैठती लेकिन जो हमारे शुद्ध संकल्प हैं, याद के संकल्प हैं, वह सारे विश्व में जा रहे हैं, दिखाते हैं देवतायें ऊपर में फेरी पहनते हैं। मैं अनुभव करती जैसे बहुत ऊपर-ऊपर सूर्य खड़ा है, वैसे हम भी खड़े हैं, हमारी योग की भावनायें ऊपर-ऊपर जाती हैं, ऊपर से हम दान दे रहे हैं, जिसको ही हम योगदान कहते हैं। सवेरे का समय हैं अपने में भरने का और शाम का है देने का।

हमारे ज्ञान की सबसे पहली बात है कि किसी में भी अटैचमेन्ट न हो, अटैचमेन्ट का पहला कांटा है। अटैचमेन्ट अर्थात् किसी से विशष प्यार.. इसी से चूँ चाँ होती, यही है माथा खपाने वाली बात, यह कांटा किसी में नहीं हो। अच्छा!